INTRODUCTION

I. THE PLACE OF SŪTA-SAṀHITĀ IN THE PURĀṆAS

The Sūta-Saṁhitā forms a part of the voluminous Skanda-Purāṇa which consists of six Saṁhitās namely, 1. Sanatkumāra-Saṁhitā (55,000 verses), 2. Sūta-Saṁhitā (6,000 verses), 3. Śaṁkara-Saṁhitā (30,000 verses), 4. Vaiṣṇava-Saṁhitā (5,000 verses), 5. Brāhma-Saṁhitā (3,000 verses) and 6. Saura-Saṁhitā (1,000 verses).[1] These Saṁhitās altogether consisting of one lakh of verses are unequally divided into a total number of fifty Khaṇḍas - of which twenty-five belong to the Sanatkumāra-Saṁhitā alone, four to the Sūta-Saṁhitā and twenty-one to the Śaṁkara-Saṁhitā.[2]

[p.1]

XXXX

R.C.Hazra finds a discrepancy in the Sūta-Saṁhitā regarding the number of verses constituting the Skanda-Purāṇa. Although it explicitly states that the Skanda-Purāṇa consists of one lakh of verses, he says, the total number of verses of all the Saṁhitās as furnished by it comes to 86,000 only.[3] But there is no such error in any of the printed editions of the Sūta-Saṁhitā. The scholar has made this criticism on the basis of a manuscript of the Sūta-Saṁhitā in the collection of the India Office Library, London, which gives an incorrect reading "granthataś caiva ṣaṭ-triṁśat-sahasreṇopa-lakṣitā" (36,000) in place of "granthataḥ pañca-pañcāśat-sahasreṇābhinirmitā" (55,000) while recounting the number of verses in the Sanatkumāra-Saṁhitā.[4]

[p. 1]

द्वितीय अध्याय

सूतसंहिता एवं उसका वर्ण्यविषय

संहितात्मक विभाग वाले स्कन्दपुराण में कुल छः संहिताएं हैं—

(१) सनत्कुमारसंहिता	(५५ हजार श्लोक)
(२) सूतसंहिता	(६ हजार श्लोक)
(३) शङ्करसंहिता	(३० हजार श्लोक)
(४) वैष्णवसंहिता	(५ हजार श्लोक)
(५) ब्राह्मसंहिता	(३ हजार श्लोक)
(६) सौरसंहिता	(१ हजार श्लोक)

लगभग एक लाख श्लोकों से युक्त ये संहिताएं पचास खण्डों में विभक्त हैं, जिनमें २५ सनत्कुमारसंहिता, ४ सूतसंहिता और २१ शङ्करसंहिता के अन्तर्गत हैं। सनत्कुमार संहिता के २५ खण्ड हैं—क्षेत्र, तीर्थ, काशी, सह्याद्रि, हिमाचल, मलयाचल, विन्ध्याद्रि, मोक्ष, प्रभास, पुष्कर, नागर, नर्मदा, श्रीशैल, अवन्ती, गौरी, क्षेत्र, केदार, हरिद्वार, सेतुमाहात्म्य, कालिका, तत्वोपाख्यान, नदी, धर्म, देश तथा वर्ण।

सूतसंहिता के ४ खण्ड हैं—शिवमाहात्म्य, ज्ञानयोग, मुक्ति तथा यज्ञवैभव।

शङ्करसंहिता के २१ खण्ड हैं—सम्भव, आसुर, वीरभद्रेन्द्र, देव, युद्ध, दक्ष, उपदेश, उपवीत, स्वर, गङ्गासागर, सागर, वेदसार, सिद्ध, प्रमेय, उमा, नागर, प्रायश्चित्त, विपाक, दानप्रशंसा, कल्याण तथा अगस्त्य।

[p. 21]

XXXX

आर.सी. हाजरा ने स्कन्दपुराण में श्लोकों की संख्या के सम्बन्ध में व्यतिक्रम की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा है कि स्कन्दपुराण में श्लोकों की संख्या एक लाख बतायी गयी है, जबकि इसकी सभी संहिताओं की कुल संख्या ८६ हजार ही है[१]। श्री हाजरा की उपर्युक्त टिप्पणी का आधार इण्डिया आफिस लाइब्रेरी, लन्दन के संग्राहलय में प्राप्त 'सूतसंहिता' की पाण्डुलिपि है, जिसमें सूतसंहिता के प्रकाशित संस्करण में उल्लिखित **'ग्रन्थतः पञ्चपञ्चाशतसहस्रेणाभिनिर्मिता'** के स्थान पर **'ग्रन्थश्चैव षट्त्रिंशतसहस्रेणोपलक्षिता'** लिखा है। व्यतिक्रम का केन्द्र सनत्कुमार संहिता है, जिसमें प्रकाशित संस्करण के अनुसार ५५ हजार श्लोक और पाण्डुलिपि में ३६ हजार श्लोक हैं।

[p. 21]